

मरु

पाय ॥ आन ॥ वेङ्ग मदा मयू नरा कुमारं वासनृषिकं नरकमूढादिरुषागं दण्ड
गकिवनयती ॥ विन्दुमूढाकनघ्रीमान् नकोस्रनविरुषवी ॥ ज्वंथा शरद
वैवदकानां नमाम्यहं ॥ आनयूषं पाय ॥ ॥ वेङ्ग ग्री की कूल यूनवदक
नायपाय ॥ ज्वंवल्लि ॥ आवाहनादि ॥ नरुनी मूढा ॥ ॥ वेङ्ग मसासनपाय ॥
आन ॥ वेङ्ग मसयूषासनसर्वदुर्गागगजवक्रकं ॥ शिनरुयगुनाउकमूला
कवेवधनकं ॥ नागयह्लापवीनच ॥ सर्वइति ननागन ॥ ज्वंविघ्नहर्न ॥ आला

गहनार्थमदात्मना ॥ आनयूषं पाय ॥ ॥ वेङ्ग मंगी मंगरसे नी कूल गला
व्यत्रायपाय ॥ ज्वंवल्लि ॥ आवाहनादि ॥ गजमूढा ॥ ॥ नता कलमयूजा ॥ जूथ
नाम ॥ आननादिब्रह्मयूहिकासनं ॥ आननराकयनम ॥ कीना दा सनायनम ॥
कलुसनाय ॥ नावासनाय ॥ कलनासनाय ॥ कलिकासनाय ॥ यमा
सनाय ॥ वृषासनाय ॥ आन ॥ गुडसूठिकरीकाती ॥ शिनरुवदुर्गा
वनदारुयह्लापवीनच ॥ मूढमालावनहन ॥ ज्वंआला मसायव ॥ शिरु कामाथसिद्धि

दा॥ अद्यान॥ वज्रमूलमल॥ ॐ हं सः ॥ अमृती मयमृती जयाय नमः॥ ॥ मा
 न्तिनादि द्वादश मासस्था ॥ १२॥ पुकाल्य ॥ जतवे ॥ समस्तनाथ ॥ की
 नादि सप्तमसूत्रस्था ॥ १०॥ अष्टादि द्वादश लोका लस्था ॥ १०॥ अष्टादि नवग
 हस्था ॥ १२॥ अष्टादि नवकृष्णस्था ॥ २१॥ विष्णु लोकादि ॥ १०॥ ॥ २७॥
 पुत्रियदादि तिथिस्था ॥ ११॥ मेखादि द्वादश नातिस्था ॥ १२॥ मूकृष्णस्था ॥
 गंगादि ॥ ३॥ अष्टादि मादि ॥ ८॥ वनिष्ठादि अष्टि ॥ ८॥ अनन्तादि नाग ॥ ८॥

मतिः विद्या कला निवृत्तिः पुत्रिष्ठा ॥ ३॥ हं हं कूल वृक्षमहासनसंमादन
 सकलमीथमनुदेवता कला कला प्रियतय वृक्षविष्णु नृदात्मन आत्मवि
 शानिवतत्वाय संहृष्टी संपूर्णकलन मूर्कथयायू ॥ ३॥ देवलि ॥ आवाहन
 दि ॥ १॥ धनमूद्रा ॥ जाय ॥ स्तोत्र ॥ वला मधी ल्यादि ॥ १॥ सप्तमसूत्र ॥ १॥ पुत्र
 नामाय ॥ १॥ मा कृष्णाय ॥ १॥ अष्टादि माय ॥ १॥ वलिवेश ॥ १॥ अष्टादि माय ॥
 १॥ हं हं मकाय ॥ १॥ हं हं मली मकाय ॥ १॥ हं हं माय ॥ १॥ आवाहनदि ॥ जाय

निकृष्ट पूजा ॥ १॥ नमो मन्त्रा पाठ पूजा ॥ आध्यात्मिक यथा दि ॥ वैश्राध्याय वक्रा
स्त्राय पाप ॥ कीर्त्तन विस्तार वक्रा स्त्राय पाप ॥ श्रीमन्मित्र वक्रा स्त्राय पाप ॥ कु
श्रुता दत्त वक्रा स्त्राय पाप ॥ श्रीविद्युद्वि वक्रा स्त्राय पाप ॥ देव श्राद्ध ॥ १॥ नै नि
नमो नमस्तस्मात् स्त्राय पाप ॥ मन्त्रा पाठ ॥ १॥ षष्ठ ॥ यथैव कलायाप ॥ ननु
ष्ठा ७॥ लं कानि न्य ७॥ वं कानि न्य ७॥ नं विस्तारि न्य ७॥ यं सुग्री कला ७॥ संच
पा ७॥ हं कपिला ७॥ लं दय वादि न्य २१॥ कं कय वादि न्य २१॥ नं श्रुति पद्य लाय

दत्त कला लन्य २॥ खट्वा स्त्राय पाप ॥ श्रीः खम स्त्राय पाप ॥ १॥ यैव प्रता स्त्रा
य पाप ॥ १॥ उजा या कादि वरुणी ॥ स्त्राय पाप ॥ १॥ श्रीः रैव वा स्त्राय पाप ॥ १॥
तिश्रु सन ॥ श्रुता पक्रा ल ॥ पाठ वरुणी मय नन लेय यमल ॥ श्रुता न ॥ व
रु ॥ धृष्ट वंग नक ॥ पूजन ॥ कं हं तय न्य कला पाप ॥ खं वं ता न्य कला पा
नं हं धृष्ट कला पाप ॥ श्रीयं मन्त्रि कला पाप ॥ नं कानि न्य कला पाप ॥ वं ध
नृ वं पाप ॥ वं धं सुष्ठु कला पाप ॥ नं धं रोग कला पाप ॥ संच विस्तार

लायायू॥ कुंनवाधियकलायायू॥ रंठंयात्रिलोकलायायू॥ ॐं क मा क
लायायू॥ वं ह्यममुलायदादमकलात्मननम॥ ॐं ह्यं ह्यं ह्यं ह्यं ह्यं
मामतश्रुयथायू॥ किमिदं विद्वकाक्षमायेकः श्रुतायहृद॥ श्रुयथायदा
कनयाकल॥ बहुसंस्तुता॥ जनमासगवतीधनतिलिकन॥ श्रुतुतादना
कववेनाश्रुवयु०न॥ ॐं तिवहसस्तुता॥ दुष्टनिनय॥ वन्यकनूविनाया
गानुसगमलादमादिता॥ तदवयवेनमंदविनिदि सिद्धिमुदायका॥ या

उपूनयन्॥ उन्माधुखुसंस्तुताश्रुयनसमानक॥ आयुत्रिंशियुधवर्धमा
नयन्॥ हंरंयायुनयन्॥ संरंयायुविशुक्तकनूस्त्रादा॥ पाउसाधन॥
शिकुटमुद्रा॥ पूजन॥ श्रुयोनामुमकुता॥ उयनमकुताविकीनकुतिमय
उंकावमात्रिशत॥ अंश्रुमताकलायायू॥ आंमालदाकलायायू॥ ॐं पूषा
कलायायू॥ ॐं उंकेकलायायू॥ उंपूकेकलायायू॥ उंनयाकलायायू॥ मंष्ट
ष्टकलायायू॥ मंननिशकलायायू॥ उंवाधियकलायायू॥ उंकाक्षक

कसहषुकिनी॥ अशूनकलाकहागगहगमिति अशूनकलाकशूनतसंवा
विनि अशूनकानन्दधव अशूनकाम्वा अशूनलककाठिसिद्धि अशूनलककाठिया
मिनिपापू॥ सँ२ हँ२ महापाउरुहात्रिकायपापू॥ सँ२ हँ२ महापाउरुहानि
यपापू॥ शिपाअलि॥ कउरु॥ धनवलि॥ आवाअ॥ महागैरमृदा महायानिमृ
दा कायविन्दनमस्मानमृदा॥ जाय॥ कउ॥ कायविद्यात्रिपुर्णधनममृतमयीन
कसिंदूनवर्णव अशुखलुक्तावदति अलिनि साग्रभासायायदया॥ साष्टि

शृङ्गिन्पासकलसूत्रगतास्मापयति सद्यवि सोल अदिद्यतजा मसिमतरुल
दामाकाल अशुपाता॥ न्तिपाउरुजा॥ ॐ॥ उँ१ वन्धयद्रासनापापू॥ उँ१
सूखासनापापू॥ यद्रासनापापू॥ अत॥ उँ१ उकवकुशिनरुव॥ यतवर्ण
वकुर्ज॥ शकिनीला एलउड अरुय अरुयिदुपा॥ वदयद्रासनासीन
सवयानिविकथ॥ सगुनूदवमीगनसवकामरुलपदा॥ सगुनूकानपाय
गउकवकुशिनरुवन्कवर्णवकुर्ज॥ सययद्रातइअरुगिर्लदुमवव

॥ सखासनगताकृष्णसर्वस्यविकीर्णितयत्रमेवत्रगुणप्राप्तमक्षमस्ययपूज
यता॥ यत्रमगुनश्चानयाय॥ १॥ एकवकुठिनश्चपीतवर्णवकुठु॥ उत्पल
पूरेकैवेववदवकमगुल॥ यत्रासनसिन्धुयुक्तातिवनासनसंस्थिता
यत्रमेवगुनसेपकसिद्धिदसिद्धिदायक॥ यत्रमेवगुनश्चानयाय॥ ३॥
सगुनगुणीलानन्ददवयाय॥ ३॥ यत्रमगुनश्चानन्ददवयाय॥ ३॥
यत्रमेवगुनमिगानन्ददवयाय॥ ३॥ इतिगुणविरुद्धात्रिकाय

याय॥ १॥ ववलि॥ आवाहनादि॥ १॥ यत्रमेव॥ १॥ इतिगुणविरुद्धा॥ १॥ न
वात्मादहन्यास॥ तनाश्रुसने॥ ३॥ अश्रुश्रुश्रुश्रुश्रु॥ कनसाधने॥ १॥
अश्रुश्रुश्रुश्रुश्रु॥ १॥ अश्रुश्रुश्रुश्रुश्रु॥ १॥ अश्रुश्रुश्रुश्रुश्रु॥ १॥
कायइ॥ १॥ अश्रुश्रुश्रुश्रुश्रु॥ १॥ अश्रुश्रुश्रुश्रुश्रु॥ १॥
दयाय॥ १॥ अश्रुश्रुश्रुश्रुश्रु॥ १॥ अश्रुश्रुश्रुश्रुश्रु॥ १॥
अश्रुश्रुश्रुश्रुश्रु॥ १॥ अश्रुश्रुश्रुश्रुश्रु॥ १॥ अश्रुश्रुश्रुश्रुश्रु॥ १॥

गन्धसं ॥ १ ॥ दत्तं स्वस्ति नमो ॥ १ ॥ सति वस्ति नमो ॥ १ ॥ दत्तं स्वस्ति नमो
 यायू ॥ १ ॥ मंत्रकुमकुलयायू ॥ १ ॥ लं हृदये यायू ॥ १ ॥ वं नाशो यायू ॥ १ ॥ वं
 द्रयायू ॥ १ ॥ यं जानूनीयायू ॥ १ ॥ उं वाददययायू ॥ १ ॥ अं अमुययू ॥ १ ॥ स
 गवायू ॥ १ ॥ तिनवासायायू ॥ १ ॥ ॥ गतो आत्मपूजा ॥ १ ॥ अद्या नामुमेतुदधि
 यायू ॥ १ ॥ यो जिनसिंहायू ॥ १ ॥ जिनपूजनमनु ॥ १ ॥ दं ग्री कलिसानन्दना
 थयायू ॥ १ ॥ स ग्रीहं गानन्दनाथयायू ॥ १ ॥ दं ग्रीहं नन्दनाथयायू ॥

नै ॥ १ ॥ दत्तं स्वस्ति नमो

१ मं ग्रीहं कालानन्दनाथयायू ॥ १ ॥ लं ग्रीधिनकीनन्दनाथयायू ॥ १ ॥
 १ यं ग्रीवालिनानन्दनाथयायू ॥ १ ॥ उं ग्रीअभिगानन्दनाथयायू ॥ १ ॥
 १ ग्रीधिनान्दहारिकाययायू ॥ १ ॥ तिनवासायायू ॥ १ ॥ ॥ गतो आत्मपूजा ॥ १ ॥
 १ अस्तन ॥ १ ॥ यद्व्यासनयायू ॥ १ ॥ सवासनाययायू ॥ १ ॥
 १ यद्व्यासनसर्वस्व ॥ १ ॥ दत्तं वकुलितोचन ॥ १ ॥ स्ववर्षचमहादीर्घं सर्ववद
 तसंयुगे ॥ १ ॥ स्ववर्षपूर्ववकुल ॥ १ ॥ दत्तं वकुलितोचन ॥ १ ॥ उरुवर्षीतवर्षस्या ॥ १ ॥

इतकनप्रितं॥ नकस्यादक्षिणधूम॥ त्वत्तमूलनमवव॥ तद्वर्षीतवर्षम्
 पीतल्योरुदक्षिण॥ नकमूलनमिहाङ्क॥ तद्वर्षीतमूलम॥ मृष्टादशुजाद
 वं कवेष्टानरुषितं॥ खञ्जटकधनदवे॥ तिलमैकगतथा॥ मृष्टकमगुलं॥
 षं॥ उमनृशद्वागभवव॥ वादीधनूससंयुक्तं॥ उवद्यक्षसु॥ तिलितं॥ चक्रवेवग
 दायाली॥ वनदारुयदसुकं॥ कायविन्दुधनदवे॥ नालकालरुषितं॥ गव
 धीतरुवद्वर्षसासनसुखसंसितं॥ एवंनृयनवात्मानं॥ मगुलं॥ गुनमगुलं॥

आशतमुपशुक्ता॥ त्रिपुरसिद्धिमानवा॥ ॐ नितवात्मा आनम॥ अविचि
 त्कथी॥ वेगं॥ आनन्दगकिरेववानन्दवा॥ नाधिपतयमृगी॥ याइका॥ त
 नेवमनुष्यमनु॥ मगुलम॥ आनयुषी॥ धायनं॥ ॐ॥ तता॥ मगुलपूजनं॥
 वेगं॥ तूँडांमहा॥ पूजागुनमगुलगी॥ कद्विकायेयापू॥ त्रिका॥ तम॥ वेगं॥
 तूँवेमहा॥ पूजागुनमगुलगी॥ तत्कायापू॥ त्रिका॥ तदक्षिण॥ वेगं॥ तूँ॥ येनम
 गुनमगुलक्षानायेयापू॥ त्रिका॥ तस्या॥ वेगं॥ तूँ॥ श्रीगुनमगुलगी॥ श्रीक्षेत्रेया
 २ तूँ॥ ५ तूँ॥ ५ तूँ॥ मेष्टिगुरु॥ सरारल॥ श्रीदेव्याये॥ पादुकां॥ दक्षिणे॥

पू॥ त्रिकाक्षललाट॥ उं॥ श्रीगिवतल्लुगुनमल्लुल श्रीपनायनयायू॥ दक्षि॥
उं॥ श्रीआत्मतल्लुगुनमल्लुलश्रुयनायायू॥ उरुन॥ उं॥ श्रीआह्लाकसूमायेया
पू॥ यन्त्रिमी॥ उं॥ श्रीजयायेयायू॥ आग्रय॥ उं॥ श्रीविक्रयायेयायू॥ नेअ
ल॥ उं॥ श्रीश्रुतितायेयायू॥ वायय॥ उं॥ श्रीश्रुयनाश्रितायेयायू॥ न॥ न
ततवाश्रमल्लुल॥ उं॥ श्रीदशकीतयायू॥ मध्य॥ उं॥ यशकीतयायू॥ पूव॥
उं॥ नंदीविद्यायेयायू॥ दक्षि॥ उं॥ लनिवृत्तयेयायू॥ यन्त्रिमी॥ उं॥ वंदीपु

तितायेयायू॥ उरुन॥ उं॥ श्रीकूलसेनवायेयायू॥ आग्रय॥ उं॥ कूलनाथ
सेनवाययायू॥ नेअल॥ उं॥ श्रीकूलउम्बुनसेनवाययायू॥ वायय॥ उं॥
श्रीकूलकपालकपालसेनवाययायू॥ न॥ न॥ उं॥ श्रीकूलश्रीह्लासे
नवाययायू॥ मल्लुल॥ उं॥ त्रिकाक्षललाट॥ उं॥ श्रीकूलश्रीह्लादवीयायू॥ उं॥
कोलमध्यदक्षि॥ पूनवर्द्धमल्लुल॥ उं॥ कांकीकंकडकडपाला
ययायू॥ आग्र॥ उं॥ गंगानांग॥ उं॥ श्रीकूलगंगवनाययायू॥ नेअल॥
उं॥ श्रीडीकूलपूववृकनाभाययायू॥ वायय॥ उं॥ श्रीकूलमहाकी

[illegible]

कं । जदिषद्वय न्यासादि धारा न्यास मूया हतं । पुन न्यास विना दवि नहि
दवा च नरु वत् ॥ कमला कुलदीपाव वचला वह्नृयिका । मह नाविका को
कुलका कनाथ गजयजयता ॥ ४८ ॥ पून बती निना सका यथा ॥ पूनः श्रम
न ॥ त्रैलोक्यं कुं ड्रं कुं ड्रं कुं ड्रं वेङ्ग मधुलव किं हि अमाद्य महा पात्रे गगन विपुल
राम पश्य रुरुरुं वं कासन या यू ॥ वङ्ग मधुले ॥ त्रैलोक्यं कुं ड्रं माह मधुल
राम धनी तरुनि नी रुं रुं ॥ सुख मधुल ॥ त्रैलोक्यं कुं ड्रं लिं का के रे पा यू ॥ वसे

वसुधात ॥ ॐ पादास्त्र ॥ ३ ॥ यात ॥ का ॥ ॐ ति व ति ति न्या मरु दान का ये व लि
गुरु र स्वा हा ॥ ॐ ति व ति ति न्या म ॥ ॐ ॥ तता य न्नि न्या म ॥ ॐ ॥ हं शून क य न्नि
या द द य ॥ ॐ ॥ यात ॥ नि गु वि ॥ ॐ ॥ हं का ल य न्नि गु रु द य ॥ ॐ ॥ हं वा म य न्नि
क रि द य ॥ ॐ ॥ क ल वू कृ ति नि गु वि ॥ ॐ ॥ हं का म य न्नि लि ग स्या ॥ ॐ ॥ लि ग स ॥ ॐ ॥
हं पि षु य न्नि प्र ष स्या न ॥ ॐ ॥ ना रि का स ॥ ॐ ॥ हं व प्र य न्नि व प्र स्या न ॥ ॐ ॥ ना रि
मा य न्नि त स ॥ ॐ ॥ हं ह वा ग नि ना र ॥ ॐ ॥ ना रि स ॥ ॐ ॥ हं स म य न्नि ना र ॥ ॐ ॥

ना रि त र्थ ॥ ॐ ॥ हं पा द य न्नि उ द न ॥ ॐ ॥ य त स ॥ ॐ ॥ हं की व य न्नि ह द य ॥ ॐ ॥
प्र व स ॥ ॐ ॥ हं वि षु य न्नि क ॥ ॐ ॥ क थ स ॥ ॐ ॥ हं वू द य न्नि मा लू म ष ॥ ॐ ॥
का स ॥ ॐ ॥ हं व य न्नि ति न स्या न ॥ ॐ ॥ मा ल स ॥ ॐ ॥ हं स दानि व य न्नि मूर्ति ह
न ॥ ॐ ॥ व स च न ॥ ॐ ॥ हं द व य न्नि क ना ग रु स ॥ ॐ ॥ व लि ॥ ॐ ॥ ति य न्नि य न्नि न्या स ॥
॥ तता य न्नि न्या स ॥ ॐ ॥ हं वा न का ह द य ॥ ॐ ॥ य धा न का व प्र ति न स्या हा ॥
ॐ ॥ हं वा न धा न हं ति वा य वो ष ह ॥ ॐ ॥ सर्व त सर्व सर्व हं क व वा य ह ॥ ॐ ॥

कंसः अतिव्यायनउजयायवषट् ॥ उं न कोनमस्तुद्वय ४ अस्तुयस्तु
तिव्यायनयास्तुद्वयकायवलि ४ २ स्ताहा ॥ ॥ उं न हं सिद्धायेयादद
ययाइकी ॥ पा ८ २ ॥ उं न हं अयैजा नूदय ३ ॥ पुलि २ ॥ उं न हं विद्यता नायेउ
नूदय ३ ॥ घातस ॥ उं न हं लंकीउ ३ ॥ उ ३ ॥ उं न हं दिकायेनालो ३ ॥ नाहि ॥
उं न हं मालयेददय ३ ॥ नूगल ॥ उं न हं मिवायक १४ ३ ॥ कथस ॥ उं न हं वंस
मूखायमूख ३ ॥ खाल ॥ उं न हं नासा मूयेनासा पूतदय ३ ॥ काह ॥ उं न हं केलि

कायेकर्णदय ३ ॥ कसयात ॥ उं न हं दनिकनीतिद्वय ३ ॥ मिखा ॥ उं न हं मूखति
नसि ३ ॥ नितस ॥ उं न हं दतादि यापनागस्तु ॥ ॥ तिद्यायगास्तुद्वयका
यवलि ४ २ स्ताहा ॥ ॥ नतास्तुद्वयतिनासा ॥ उं न हं सवस्तायददयाय
याइकी ॥ उं न हं अमतरुजीमालिनीहफि नितसस्ताहा ॥ उं न हं मूवदमूवद
मिन्ननादिवाधमिखायवषट् ॥ उं न हं उं न नीवजधनाये सुमनेकववायह ॥
उं न हं नावानिहमूलफगकि ॥ सुदुतजीमिन्ननउजयायवषट् ॥ उं न हं न

मधुर्यं ननननकिनिना रुमंदाया गुपता स्नाय सुसमा काय दूरुद ॥ १५ ॥ पि
तसद्यतातकना गुरुल ॥ ॐ तिष्ठतु इति नास रुदाय काय वलिं गुरुदस्ता हा ॥
॥ ततो मालना न्यास ॥ ॐ नननादिनिगि माया पादुका ॥ मिलिखा ॥ ॐ न थं
यमनी उडगिना माला या ३ ॥ वसुधा ॥ ॐ न अदि वृत्त्या यमूर्चनिना माला या ३ ॥
हूडस ॥ ॐ न मृड विष्णयदकिना माला या ३ ॥ नवक्रसवा ॥ ॐ न तं विद्या य
उरुननिना माला या ३ ॥ नवक्रसवा ॥ ॐ न तं मत्यायपविमगिना माला या ३ ॥ क

वन ॥ ॐ न वं वा मूलायडिता यन ३ ॥ मिखा सायव ॥ ॐ न थं प्रियदगनी न
३ ॥ तिष्ठतु मिखा ॥ ॐ न लं नाना यलिकलूदय ३ ॥ कस्यातनिगुलि ॥
ॐ न तु मादनी दकिना कलूदय ३ ॥ नवक्रसकलुल ॥ ॐ न तु पाहा वा
मकलूदय ३ ॥ नवक्रसकलुल ॥ ॐ न ॐ गुडगकिना सायुयनदय ३ ॥
क्रासयावनिगुलि ॥ ॐ न वं वं नीवक्र ३ ॥ खोलस ॥ ॐ न कं केठा यडुदय ३ ॥
वास ॥ ॐ न र्वं कालि काय उडदसनय ३ ॥ थं वास ॥ ॐ न गं निनाययुध

दशानयक ३॥ काथूवा ॥ उँ १ घं घा घा यउ द्वा ३॥ थथूकुउति ॥ उँ १ दं विना
यश्चि ३॥ काथूसि ॥ उँ १ ०० मा या य कि द्वा या ३॥ मस ॥ उँ १ श्रं वा गय
नी वा वा य ३॥ मया वा स ॥ उँ १ चं नि सि वा दनी क १८ ३॥ कथूस ॥ उँ १ रुं
ली घनी दक्षिण वा द्वा नि खन ३॥ जव वा द्वा न ॥ उँ १ य वं ग य वा म वा द्वा नि
खन ३॥ खव वा द्वा न ॥ उँ १ उं मा या य दक्षिण वा द्वा द १३ ॥ जव जल स ॥ उँ १
दं विना य का य वा म वा द्वा द १३ ॥ खव जल स ॥ उँ १ ०० पूरु मा य क न न

ल दय ३॥ ला द्वा थ नि गु लि ॥ उँ १ मं जं काल नि दक्षिण द्वा कला गु ल ३॥
जव यश्च ३॥ उँ १ ०० कृद नी वा म द्वा कला गु ल ३॥ ख व यश्च ३॥ उँ १ नं दि
य नि गु ल द १३ दक्षिण द्वा ३॥ य वी वा स ॥ उँ १ जं न य त्या य दक्षिण द्वा ३॥
जव या तला द्वा न ॥ उँ १ दं कया लि नी क या ल वा म द्वा ३॥ ख व या तला द्वा न ॥
उँ १ यं या व नी ह दि म १३ ॥ नू ग ल स ॥ उँ १ दं श्रु चि का य प्रा णा य म ३॥ ह
दय ॥ उँ १ स सं वा मा य दक्षिण या १३ ॥ जव जल ॥ उँ १ श्रुं द्वा न द्वा वा म या

१७३॥ स्ववज्रद ॥ उं न कं का गतिदक्षिणरुम ३ ॥ नवइइ ॥ उं न लं पूत नि वाम
 रुने ३ ॥ स्ववइइ ॥ उं न आं ब्रमा ल्या याय यइय ३ ॥ इइ २ ॥ उं न यं ले वा नी उद
 ले ३ ॥ प्यतस ॥ उं न कं १ तीक्ष्ण नि ना रि म ॥ ३ ॥ लरुस ॥ उं न मं मं हा काल नी तं य ३
 ॥ लरु का ॥ उं न मं कं पु म माल नी पु ३ ॥ पु ३ ॥ उं न मं कं द वी पु ३ ॥ पु
 रुने का ॥ उं न तं मा वा य द वी उ नू द य ३ ॥ य म धा त ॥ उं न तं जो ना य द कि त जा ना
 ३ ॥ न व म् ॥ उं न उं क्रि या य वा म जा ना ३ ॥ स्ववयू ॥ उं न उं ग य ले द कि त रं

७
 य ३ ॥ न व कं क ॥ उं न डो ना वि जी वा म रं य ३ ॥ स्वव कं क ॥ उं न दं द द ति द कि
 ल या द ३ ॥ न व पा त लि ॥ उं न रुं रुं कालि ने वा म या द ३ ॥ स्वव पा त लि ॥ रु ति
 माल नी वा म ॥ उं न रुं रुं द द या य न म ॥ उं न रुं रुं ति त स स्त्रा हा ॥ उं न रुं
 ति खो ये वो ष ट् ॥ उं न रुं रुं क व वा य रुं ॥ उं न रुं रुं ने तु रु या ये व ष ट् ॥ उं न रुं रुं
 रुं रुं रुं रुं ॥ रुं रुं माल नी रुं रुं य र्प वा स व रुं द वी ३ ॥ उं न व लि रुं रुं रुं रुं
 हा ॥ रुं रुं माल नी रुं रुं वा स म उं रुं रुं रुं ॥ रुं रुं रुं रुं रुं रुं रुं रुं रुं रुं ॥ ॥ गती

मद्यनागिन्यासकनयन॥ॐ नमो श्री कलालाद॥ कपालस॥ॐ नमो श्री
नक्तमलुलवकु॥ खोलस॥ॐ नमो श्री सदक्षितन॥ॐ नमो श्री
ॐ नमो श्री मुखिवा मन॥ॐ नमो श्री खवमिखा॥ॐ नमो श्री मनी सदक्षितक
॥ॐ नमो श्री जवक्रस॥ॐ नमो श्री अधिसवामक॥ॐ नमो श्री खवक्रस॥ॐ नमो श्री अतिथि
मदक्षितनासायुत॥ॐ नमो श्री जवक्रस॥ॐ नमो श्री नरुतिवा मनासायुत॥ॐ नमो श्री
खवक्रस॥ॐ नमो श्री नरुदक्षितग॥ॐ नमो श्री जवदतान॥ॐ नमो श्री नरुदवा मग॥ॐ नमो श्री

खवदतान॥ॐ नमो श्री नरुदमिखदतनयक॥ॐ नमो श्री काथवास॥ॐ नमो श्री रुक्ति
सुडडादतनयक॥ॐ नमो श्री थथवास॥ॐ नमो श्री डांमयाता नरुदमिख॥ॐ नमो श्री काथ
मि॥ॐ नमो श्री डांमयादिसुडडा॥ॐ नमो श्री थथमि॥ॐ नमो श्री नरुदमिख॥ॐ नमो श्री
थकास॥ॐ नमो श्री मदासनजिक्काय॥ॐ नमो श्री मस॥ॐ नमो श्री क॥ॐ नमो श्री काथदक्षितक॥ॐ नमो श्री
जवगन॥ॐ नमो श्री ख॥ॐ नमो श्री वलुदक्षितवाकूद॥ॐ नमो श्री जववाकूद॥ॐ नमो श्री ग॥ॐ नमो श्री
लुदक्षितदक्षमनिव॥ॐ नमो श्री जववृत्ता॥ॐ नमो श्री य॥ॐ नमो श्री निवदक्षितदक्ष॥ॐ नमो श्री
वलादा॥ॐ नमो श्री न॥ॐ नमो श्री क॥ॐ नमो श्री नरुदक्षितदक्षकनागुनि॥ॐ नमो श्री जवप॥ॐ नमो श्री

वैकुण्ठमवा मन्त्र ॥ १ ॥ खवगत ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ खव
वादा ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ खववृत्त्या ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
वामदक्षिण ॥ १ ॥ खवलादा ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ खव
यवद ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ खवजन्म ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
क्षिप्रयागे ॥ १ ॥ खवखल ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ खवयू ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
शुद्धतात्री स दक्षिणार्धे ॥ १ ॥ खवकु ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
२ ॥ खवपात ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ खवजन्म ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

वामानपाद ॥ १ ॥ खवखल ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ खवयू ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
मीनवामजंघया ॥ १ ॥ खवकु ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ खवपात ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
यलाक्षिणदक्षिणार्धे ॥ १ ॥ खवजन्म ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ खव
जन्म ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ खवयू ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
खरुस ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ नगलस ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
म ॥ १ ॥ लिगया ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ लिगमूल ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

किं समाप्तं ॥ नास्ति वा श्रद्धा ॥ उं न वं घं ज्ञानं नन्दना प्रमथ ॥ कलस ॥ उं न
नं वं कानन्दे श्रुतिमथ ॥ य एतत् ॥ उं न वं ज्ञानं नन्दमकृति ॥ मुदम
॥ उं न संहारं पुक ॥ श्रुतिमथ ॥ उं न दलाकुली स्यानामव ॥ ॥ ॥
उं न कं सुवैकुण्ठाय द्यां पुष्टयं मथ पाइका ॥ य वि ति गु ॥ ॥ उं न द्या
हृदयाय नम ॥ उं न कुं निवस स्वाहा ॥ उं न कुं निषाये वोषट् ॥ उं न कुं
मुं कववाय ॥ उं न कुं नं गगयाये वषट् ॥ उं न कुं श्रुत्याय ॥

॥ उं न कुं ग दना सीति लेन वस्तु कानि पश्य सर्वभूय नम ॥ उर्ववर्तिन
केशवा ॥ ॥ उं न कुं ग दना सिन्याम ॥ श्री हत्यादि पायना ॥ ॥
गताय उक्त ॥ न्याम ॥ उं न कालि कालिमहा कालि मां सता नितरा जन ॥ कां
कुं न क कं सुमुखि धवी मां मां य स्यु गजवा पी हृदय इति हृदय या
इका ॥ हृदय ॥ उं न नमो गवती इष्ट वा अतिनी इष्टे वि नमा नृक नीक
या लख द्वा गधावती हन २ दह २ धम २ यव २ मम गज २ स २ मो नय २ इ २

आगिनी ३॥ लिंग स॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ कलागगलगमिनी यवला
कश्मलसखसिनी यवनानन्ददेवयवनाम्बा उज्ज्वलकाटिसिद्धि
उज्ज्वलकाटियागिनी ३॥ गुण स॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ कलागगलगमिनी
मिनी मूलका कश्मलसखसिनी मूलानन्ददेवमर्त्याम्बा अञ्जलकाटिसि
द्धि अञ्जलकाटियागिनी ३॥ वाज स॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ कला
गगलगमिनी नागला कलागगलगमिनी नागला कश्मलसखसिनी नाग

नन्ददेवनाम्बा यवला त्रिवक्त्रकाटिसिद्धयवला त्रिवक्त्रकाटियागिनी ३॥ गुण
स॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ कलागगलगमिनी अञ्जलका कश्मल
तसखसिनी अञ्जलानन्ददेव अञ्जलान्ताम्बा अञ्जलवक्त्रकाटिसिद्ध अञ्जलवक्त्र
काटियागिनी ३॥ त्रिवक्त्र स॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ कलागगलगमिनी
लिंगक २ खाहा ॥ स्वर्गसंस्था फल ॥ ॥ पून नवात्मा न्यास ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
रुद्र ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

यादाहुतिपू३॥ जवथां श्रुति॥ जेनरुटपिवदहो पिवनायेवाभनूयादा
गुनीष३॥ खवथां श्रुति॥ नुतिद्यानिकांन्या सरुहानकायवतिगृह३॥
दा॥ ॥ तनावदखलुन्यास॥ जेनमासगवतिनूडाथरुयादागुयेया३॥ को
६॥ जनमासकासमाहनांरुगुलूदया३॥ गुरि३॥ जश्रुजनामनीरुजया
दया३॥ ॥ ३॥ ॥ सवज्यापतिरुतग्रीरिषरुजानूदया३॥ पू६३॥ जस्रु
ययनिवरुनीनीरुउनूदया३॥ कजलश्रुविथवि॥ ॥ सवस्रुवनीकर३॥

आदनामूलनसमरुकमपयहनिनीनीरुयानो३॥ वसश्रुपथव॥ ॥ स
वमारुगुश्रुददययनमसिद्धिरुनारुन३॥ नाहिकावो॥ जयनमकमा
ददनकनससिद्धिकवरुगुश्रु३॥ मार्ग॥ ॥ मारुमववनगुरुहोति॥ ३॥
॥ रिंग॥ नुतिनूडखलुन्यासायवतिगृह३॥ दा॥ ॥ नूथमारुखलु॥
॥ नूथानश्रुमायवनदविमलश्रुवकायलीविज३॥ ददय॥ ॥ वकोमारु
वनी३॥ कथू॥ ॥ वकोमात्री३॥ थका॥ ॥ नूवेषूवी३॥ खान॥ ॥ नूवोनादी३॥

क्रास ॥ अयं न्यायही ३ ॥ दत्तान ॥ अयं वा मृत्तय ३ ॥ विन्द ॥ अयं महात्
की ३ ॥ चमपान ॥ ॥ तिमा नृखु न्यासाय बलिगृह २ सादा ॥ ॥ अ
थ मनुख ॥ अतमममृत्तु रूतलाटयाइका ॥ अउडकनिहंका ३ ॥ सदा ॥
अद्यानितनिखरुंतिखाया ३ ॥ मिलिखा ॥ अविशुक्तिरुंजिकाया ३ ॥ मदा ॥
अतालकाकिरुंन ३ ॥ मिखा २ ॥ अयिद्वन्तुवरुं कुवा ३ ॥ मिदा ॥ अविद्वानि
इरुंरुं देखाय ३ ॥ धनवा ॥ अकुड २ रुंदा मया ३ ॥ थथकाथुसि ॥ अमास

रसाति ससूना सर्वपियरुंजिकाय ३ ॥ मदास ॥ अदनरतातुमर ३ ॥ थ
कास ॥ अनृत्यनृत्यरुंवा रुदया ३ ॥ वाहाउनिउलि ॥ अविद्यमृ २ रुं कर्तुय २ ॥
कथ ॥ अमाया उलो मृत्तय ससुपयनिवरुंनीरुं कर्तुय ३ ॥ कथूनका ॥ अनृ
इ २ रुं हदिमर ३ ॥ नृगलस ॥ अकुट २ रुंता लो ३ ॥ नाति ॥ अविलि २ रुं नित
व ३ ॥ मात ॥ अदिनि २ रुंका द्या ३ ॥ वस ॥ अतिनि २ रुं लिंग ३ ॥ लिंग ॥ अ
विद २ रुं गु ३ ॥ मान ॥ अतासनि २ रुं देकि एम ३ ॥ अववका ॥ अशमनि २

रुं वा म नू ३ ॥ ख व व क ॥ १ वि डा व नि २ रुं डं प ल्हा द य ३ ॥ उ य ल्हा व न र वी ॥ १
का रु नी २ रुं दं कि स ग न नि ॥ १ व य ० ॥ १ मा न ती २ रुं वा म ग न नि ३ ॥ ख व य
० ॥ १ मं त्रि व नि रुं दं कि स गं य य ३ ॥ १ व क ॥ १ रुं वि २ रुं वा म गं य य ३ ॥
ख व क ॥ १ र ग नि २ रुं दं कि स ग ल्हा य ३ ॥ १ व गुं वि ॥ १ घू वि २ रुं वा म ग
ल्हा य ३ ॥ ख व गुं वि ॥ १ घू वि ल २ रुं दं कि स य द ३ ॥ १ व य ० ॥ १ न म मा
रु ना य रुं वा म य द ३ ॥ ख व य ० ॥ १ वा म्भु य व न द वि च य द म्भु य ३ ॥

१ व ख व म्भु ना ॥ १ म नु ख गु न्या सा य व लिं ग क र ल्हा द ॥ ०० ति वि स्रु न्या
३ ॥ ॥ १ क्री ना र्ण य त द य ३ ॥ का स म्भ २ ॥ १ कृ म्भु र्भु ३ ॥ र्भु ना ॥ १ यं न उ
य ३ ॥ मि र्भु ना गु न ॥ १ स स र्भु त्म न २ ॥ स व स र्भु ॥ १ रुं क र्भु द य ३ ॥ क स
या त २ ॥ १ म्भु य द द य ३ ॥ या ० २ ॥ ०० ति न का क वि न्या स य व लिं ग क र ल्हा द ॥
॥ १ म्भु ल ला र्भु य इ का ॥ ल ला र्भु ॥ १ ०० क र्भु ३ ॥ क थू स ॥ १ उ म्भु र्भु ३ ॥ म्भु
रु ॥ १ रुं उ म्भु ३ ॥ लिं ग ॥ १ उ यो द द य ३ ॥ या ० ॥ ०० ति यी रुं य व क न्या सा य

[illegible][illegible]

देव वा तुल्यं ब्रह्मा सा स्वयं या प्र॥ १२॥ अहं श्रीगुनयुक्तिरुदात्र काय या प्र॥
आवाहनादि॥ अत्र मूडा॥ नृतिगुनयुक्ति॥ ॥ तता उषधि॥ अथ आसना
य या प्र॥ अत्र॥ अथ आसनसूखा नीन॥ अथ तवर्गुलितावन॥ शिवज्ञादकिं
नक्त॥ अथ गयी साम्भ्रुतं॥ कृता सर्वमदावीना दधती स्वमर्तुना गउमन
शिखरुगुव नीला ससमपरा॥ या उविन्द कत्र प्रष्टुमानतयथा धनान
उषधी कर्म अत्र ग्या जीवितं विनशी विन॥ नृति विविं तयत्॥ अङ्गुल सर्वजन

आरुनी या प्र॥ अङ्गुल सर्वजनमादनी या प्र॥ अङ्गुल सर्वजनमरुनी या प्र॥
अङ्गुल सर्वजनसुमनी या प्र॥ अङ्गुल सर्वजन श्रोकर्षनी या प्र॥ अङ्गुल
सर्वजनकुडावनी या प्र॥ अहं उषधी कर्म रुदात्र काये या प्र॥ अत्र
नवलि॥ आवाहनादि॥ या निमूडा॥ जाय॥ कृता॥ नृति उषधी कर्म पूजा
॥ ॥ अथ आसनाय या प्र॥ अमिहासनाय या प्र॥ अत्र॥ वषसिंहा
सनादवर्हमश्वत्थु नृसंनिहा॥ एकवक्त्रा रितं उच दिशन् यमदा

दन॥ वउउऊ मरुता न, गिल्ला कवध नती। दया कका नूना सिंग
कया ला पूरुपाया ॥ दया विवूक पृत्वा न सय दस पूषा नती। वा
मा नूऊ मता दवी, धम मां गित वसा रती ॥ वना तेय करं दवी, गिनश
दिय नू पिती। दिय न लांग रु मां गी दिय व मुप वी धना ॥ उर्व धा त्वा म
हा द वं ग्री कलं व न म ली ने ॥ धन या पू ॥ गद रे स रे ग्री कं ० सत कि
सहि नाय या पू ॥ मल न वलि ॥ आ वा द मा दि ॥ वन्द ना क न पृथी न मः ॥

निवग कि मूडा ॥ नू ति ग्री कला जने ॥ ॥ गद सा स नाय या पू ॥ धन ॥
गद सा स न सि त द वी, पी तां ग व व उऊ गी। पूरु का के वि नू मूडा धा जी ने व
नु धा यती ॥ धन या पू ॥ ग आ धा न आ धा य व न दे वि म ल डी आ ग्री श्रू व आ
य ती द वी या पू ॥ मल न व लि ॥ नू ति मू ज नी ॥ ॥ गद सा स नाय या
पू ॥ धन ॥ गद सा स नाय वि लं व लु कां ग व व उऊ गी। मल का वि नू मूडा व
आ ला मा द ल वी ति व ॥ धन या पू ॥ ग आ धा न आ धा य व न दे वि म ल डी आ
वू

दाक्षणीकलोचन॥ दत्तवाक्यमहातज्ञातागयक्षायवीरुके॥ कथालीरुटकीयान
खर्वागदय्यमपिथावामनायूथनादिथिदक्षिणनतता॥ १८॥ रक्तावाततथास
प्यतिरुत्तवत्रयतथा॥ दक्षिणनकरंदवीदिवाभालायूथप्रिय॥ नानातनदास
यूक्तानालेकात्ररुषिता॥ यथासनसूखासीन॥ यथात्रुत्तुतज्ञसे॥ एवंआत्मास
हादवलेनवमाहमथग॥ आनयाय॥ ॥ नताप्रुत्तने॥ मनुश्रुधात्रुत्तुकादिश्र
सिर्तागदिबुद्धाद्यादि॥ ॥ वेंगमुंमुंमुंमुंगिरासुत्तुदमहासेनवाययाय॥

असंख्यगकिरीयाय॥ वलि॥ शाय॥ साउ॥ नितिसुत्तुदमहासेन॥ ॥ नतालगव
ल्याचन॥ न्यास॥ आननगकयत्यादि॥ ॥ सिंहासनाययाइकी॥ ॥ मदिषास
नाय॥ ॥ गुंरासनाय॥ ॥ तिष्ठरासनाय॥ ॥ नम॥ ॥ ग्रीकीवत्तुवाप्रयया
३॥ ॥ ग्रीकीयाइकी॥ आन॥ ॥ वेंगउयवत्तुमहादवी॥ अथहगवतीपुगा॥ तफ
वामीकनाहासा॥ विद्युत्ताटिसुमप्ररा॥ यीनवत्तुलासा॥ ॥ जिन्नावात्रुत्तुसि
ना॥ किरीटिउत्तुलाकारे॥ कयनेमतिनायूना॥ नत्तमात्ताविविउत्तुहात्तमा

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीमद्भगवद्गीता ॥
अध्यायः प्रथमः ॥ अर्जुनसंवादे ॥
अर्जुन उवाच ॥ द्रुपदमुनिर्मातुल्यः ॥
कुरुक्षेत्रे भिक्षुं तं दृष्ट्वा संयतचित्तम् ॥
ततः परमं वीर्यं दृष्ट्वा विशतपसा ॥
संयतचित्तो वीर्यवान् ॥ १ ॥
ततः परमं वीर्यं दृष्ट्वा विशतपसा ॥
संयतचित्तो वीर्यवान् ॥ १ ॥
ततः परमं वीर्यं दृष्ट्वा विशतपसा ॥
संयतचित्तो वीर्यवान् ॥ १ ॥

1.061

त्रिभुवामहादनी। षड्भुजाद्यादतउतासूर्यास्त्रिभुववर्जिता॥ मूढमात्राधनी
नोडीदक्षकनालिका नना। अष्टादशम्वकादवी वचनोदतिगानूदा॥ व्यापु
वमपयनीधना, सिद्धवमालिनीयका। दिशासुततसुवाकी सादहासासाहा
सिनी॥ तस्याः धीतजलीवकु मूलन। अमसतिरो। वकि। तसुववर्जिताली म
खपुदगिर्त॥ पूर्ववकु रवउक मी। गजसु टिकायम। सदप्रसूयसिको।
मूडवकु यवाञ्जित॥ वीरकूपववामव दकक धुतिम्वयि। नाशा ए

वीरवलीव तलस्यपिकु मालक॥ जिना विरवालूलय गतवकु ववीय
हा। जलसो मीरमा। अयुवविदक क धुग॥ यनावकु मूडद। तमसु
कयवाविदे। मवदक्ष कनालीव वकु न्यका निगमुना॥ अष्टाध्या
यवअमिकुटिकायाः महाकिवा दकि। तनयथा। गत वामवेवविज्ञान
त॥ त्रिभुववकु वजाति मूलन। तनकहिकन दकि। तवामता दशा
लीलायलसतानक॥ नून्यवमूढ खजांग घण। पूरकयनूक थ। कया

लंबा मक था कं सि हा स न स वा स नी ॥ न नि धान म ध वि वि न य म ॥ ॥

म य जी म लु स लाने श्रु ति लाने मूल म लु व वि ल य न व मूल काने ॥ स का न
क द ॥ श्रु एत नी लान ने म ए वा य म म ए व नु वि ह श्रु ए क द द य न श्रु
व म न मू डी द ग य न ॥ मूल म लु स म श्रु ॥ ॥ ॐ श्रु धा न कां थ धा न की
धा न धा न क न क रूं से व न स व स व डे श म ॥ ॐ नू नू य ड ॥ या इ की ॥ ॐ नू नू
व ज क डि ती मू जे ला का क र्घ नी डी का मा ग डा व नी की मी म हा का र का न

नी ॐ सो स ॥ ग्री या इ की ॥ ॐ न मा र ग व ती मू क डि का ये कां डी कू धा न श्रु
धा न श्रु धा ना मू शि कां डी कि ति र वि न यो इ की ॥ ॐ न मा र ग व ति मू
क डि का ये मू क डी मू द न न म्य श्रु धा ना मू शि कां डी कि ति र वि न
या इ की ॥ ॐ न मा र ग व ति सि ड मू क डी मू क डि क मू डी मू ख
ग ॐ धा न श्रु धा न श्रु धा ना मू शि कां डी कि ति र वि न यो इ की ॥
ॐ न र २ श्रु न न द ग कि ले न वा न न दी ना धि य न य स २ या इ की ॐ न

सं० श्रानन्दसक्तिरेववानन्दवीनाविषयतय श्रीमहाविद्यानामोत्तरीय
२० पादका मूलषडङ्गवकुलसंपूज्य आवाहनोदि॥ धनूयात्रिम्
उदयार्थत॥ श्रीगुरुवीरशक्तिनीत्याया॥ ॥ ततोऽपि कासमेष्वपूजनं ॥
उं नमो श्रीयेदीयवलादेवी श्रीमहादेवकुलयाल॥ श्रीकृतयुगश्रीडा
डिया नमदा मूडापी १० श्रीडाडिया म्हादेवी श्रीउंछी मनाथदेव श्रीमहा
म्हादेवी श्रीआधारी जननन्ददेव श्रीकूकारी महकात्रिका वृक श्रीकदम्ब

क श्रीउदयगिरिचर्त श्रीकदम्बगुहा श्रीगिरिनीम ० श्रीकनवीनममन
श्रीवदकनाथकुलयाल श्रीआदिनाथवदकयिगु श्रीकूटिकानन्ददेवश्री
कलानमूडायाय म॥ ॥ उं नमो श्रीवन्ददीयरीमला म्हादेवी श्रीसुग
महाकुलयाल॥ श्रीकृतयुग श्रीगो लन नमदा मूडापी १० श्रीमाला म्हा
देवी श्रीमालीननाथदेव श्रीकलानी म्हादेवी श्रीकूलजी जननन्ददेव श्री
कूकारिमहकात्रिका वृक श्रीकी नवृक श्रीदिमगिरिचर्त श्रीक

वी गुहा श्रीमहा मन्त्रानम ० श्री ली गल श्रीमान श्री यमदुर्गुपाल
श्री यथा नाथ वदुर्गुपाल श्री कृष्ण कानन्ददव श्री विक्रान्त मूडा या
पू॥ दका ॥ श्री गुरु श्री जननी यकलनादवी श्री एमपाल कुरुपाल श्री
कायनयुग श्री पूरुषाणि विमलामूडा या १० श्री पूरुषादवी श्री पूरुषा
थदव श्री वलुकादवी श्री वकीमानन्ददव श्री कृष्ण विमलकाविका
वृक्ष श्री विष्णु नीवृक्ष श्री अनन विप्रवर्त श्री सिद्धिगुहा श्री यकलीम

० श्री ब्रह्मा नमः श्री विमलकुरुपाल श्री वशीनाथ वदुर्गुपाल श्री कृ
ष्ण कानन्ददव श्री कुरु मूडा या पू॥ वा ॥ श्री गुरु श्री नलदीपवमदवी श्री
महाकाल कुरुपाल श्री कलियुग श्री कामरूपमहा मूडा या १० श्री काम
विष्णुमादवी श्री कामीनाथदव श्री महागुरुमादवी श्री मदनी सा
नन्ददव श्री कृष्ण श्री मलकाविका श्री सामनिप्रवर्त श्री उमरुगुहा
श्री मानन्दम ० श्री महा मन्त्र श्री वदुर्गुपाल श्री बालनाथ वदुर्गु

नूयाती तद्दी कृत्ति कानन्ददवद्दी याति मूडा याय ॥ मूडा येन मूडा वलदी
पथ म्मादिवीदी मदा काल केरु पाल सो ग्री श्रवता नयूग दी मदीयेनाय नव
दुयी १० ग्री वडि न्य म्मादवी ग्री वली तनाथदवद्दी मातंगिन्य म्मादवी ग्री ग्री
मदन्धी म्मनन्ददवद्दी कृत्ति मद्का तिका वृत्त ग्री याति जात वृत्त ग्री श्रम
तवसी ग्री दी मन्नि विषवत्त दी निरिला ११ मन्नुहा ग्री वन्द पून म ० ग्री श्रय
कम्पमेन दी विगयनाथ केरु पाल ग्री दी कठनाथ वृत्त ग्री सव्वया विग्री

मायाती तद्दी कृत्ति कानन्ददवद्दी शवरी मूडा याय ॥ यनाय ना विग्री श्रय
युगमवतान ग्री यनतल मूडा ग्री तिमा म्मा मूडा ग्री मातंगी तनाथ ग्री मातंगी
श्रमायाय ॥ मूयवयी १० ॥ म १५ दिका मूडा म्मा याय ॥ यी १० यवकी विग्री
यवयी १० या वलि मूडा २ म्मा हा ॥ ग्री श्रवता नयी १० ग्री कृत्ति काया म १५ ॥
ग्री लेलयी १० वन्न वाया ॥ नेजया ॥ मद्दुयी १० ग्री मद्का तिका या वायूय ॥
ग्री केलासयी १० ग्री कम्पलाया ॥ मूडा ॥ वायूय का ११ यी १० वरुक्त ॥

श्रुवता नादि यी ० व शुक्लखावलि गृह २ खादा ॥ १ श्री ग्रा १७ श्री कमला
अदिविमल ग्री मय द्वाया उरु २ ॥ १ संबल विमल ग्री यूलान्दीया प्रवा ॥
१ श्री योगविमल ग्री तवनीया दकि १॥ १ श्री सिद्धि विमल ग्री वमका ॥ यविम
१ श्री समय विमल ग्री कृत्रिकाया ॥ म १५ ॥ उरु न पकि कमल पूजयत ॥ १॥
मनका विमल यवकी ॥ १ विमल यव कल्यावलि गृह २ खादा ॥ १ कों डी मय
नात्रिका यै डों लू कलापि सा सी लूं मूं विगुड सा कि नी य पु कृ ति पू श्वि जी

मनन्ददव घा ॥ पूवा ॥ १ धा न श्रु धा न श्रु धा ना मरिवरू नूया ये डे लूं मंडा
षिका की कूं मूं श्रु ना दत का कि नी य गु न यू नि वि वि नन्ददव घा ॥ नै मत ॥
१ डां डी कूं वें च न नि ख डूं लूं वें लूं धिला ली लूं लूं मूं मनि पू न कला कि नी य मय
मृ ली मनन्ददव घा ॥ वा यू य ॥ १ श्रु कूं विका ये डूं कल दी पा ये डी लूं य दा धि
नौ नी लूं मूं सा धि लान ना कि नी य धी पू वी श्रु नू गृ ही मनन्ददव घा ॥ १॥ नै मत ॥
१ न मार डूं गवती हल मला ये डों लूं उव ना धि १ १ डूं मूं आ धा न डो कि नी य

四

त्रिभुवनानन्ददवया ॥ यज्विभ ॥ १ ॥ ॐ त्रिभुवनवडुकात्रिका ॥ १ ॥ श्रीश्रु
 लाये श्रीश्रानन्ददवया ॥ पूज ॥ १ श्रीरुलाये श्रीश्रानन्ददवया ॥ श्री
 एने ॥ १ श्रीगीत्रये श्रीश्रविकानन्ददवया ॥ दक्षि ॥ १ श्रीमिशये श्रीश्रव
 तानानन्ददवया ॥ नेजस्य ॥ १ श्रीकाकृष्णये श्रीश्रानन्ददवया ॥ यज्वि
 भ ॥ १ ॥ ॐ त्रिभुवलादिपंचकनेजस्य ॥ १ श्रीनीलाये श्रीवृद्धकम्पानन्द
 दवया ॥ १ श्रीहृन्नाये मरुत्कम्पानन्ददवया ॥ उरुद ॥ १ श्रीक्रियाये श्रीवा

स्वास्ति

ॐ श्रीसूर्यात्मनः देवया ॥ ॐ श्रीतीक्ष्णानन्ददेवया ॥ ॐ श्रीशिवानन्ददेवया ॥
ॐ श्रीमहानन्ददेवया ॥ ॐ श्रीसिद्धानन्ददेवया ॥ ॐ श्रीरामानन्ददेवया ॥
ॐ श्रीविजयानन्ददेवया ॥ ॐ श्रीमिश्रानन्ददेवया ॥ ॐ श्रीसूत्रानन्ददेवया
॥ ॐ श्रीविमलानन्ददेवया ॥ ॐ श्रीरविकानन्ददेवया ॥ ॐ श्रीमूढानन्ददेवया ॥
ॐ श्रीमलानन्ददेवया ॥ ॐ श्रीकलानन्ददेवया ॥ ॐ श्रीश्रुतानन्ददेवया ॥
ॐ श्रीगणानन्ददेवया ॥ १७ ॥ श्रुतकूटद्वयपूर्ववत् ॥ इति शतपथपुराणा ॥

॥ ॐ श्रीश्रुकलायामनन्ददेवया ॥ ॐ श्रीकलायामिश्रानन्ददेवया ॥ ॐ
श्रीकलिकायामनन्ददेवया ॥ ॐ श्रीकलायामिश्रानन्ददेवया ॥ पूर्ववत्
लघीतपुष्पम् ॥ ॐ श्रीकलारव्यायामनन्ददेवया ॥ ॐ श्रीसिद्धायसिद्धानन्ददे
वया ॥ ॐ श्रीलक्ष्म्यायविमलानन्ददेवया ॥ ॐ श्रीकलसूक्त्यायकानन्ददेव
या ॥ ॐ श्रीविकलायश्रुतानन्ददेवया ॥ ॐ श्रीकलितायकानन्ददेवया ॥
उक्तं चतुर्दशतमकपुष्पम् ॥ ॐ श्रीवदनायसूक्तानन्ददेवया ॥ ॐ श्रीमनाका

यथा॥ ॐ ह्रीं श्रीं स्यात् नित्यं सूत्राधिप उरु नव कुशयथा॥ ॐ ह्रीं श्रीं यन्त्रि
मव कुशयथा॥ ॐ नित्यं कुशयथा॥ ॐ सृजि वनि २ शृंगु श्वा यथा॥ ॐ उड्ड कति
त ऊनीया॥ ॐ कलितानि श्व मध्व सा यथा॥ ॐ माया जेला क नू य स ह प्र य
निदलिनी नां श्रुना तिका यथा॥ ॐ तान का क कनिष्ठिका यथा॥ ॐ मान
हि २ कन त ले या॥ ॐ नित्यं कन यथा॥ ॐ सृजि वनी २ ह दया यन म॥ ॐ
उड्ड कतिनी ति व स स्वा हा॥ ॐ कलितानि श्व निरा ये वी षट्॥ ॐ माया जेला

कनू य स ह प्र य निदलिनी नां कव वा य हू॥ ॐ तान का क न गुरु या य व षट्॥
ॐ मान हि २ श्रु मु श्वा य हू॥ ॐ नित्यं श्रु ग यथा॥ ॐ पद्म पुता सना यथा॥
ॐ न॥ ॐ विश्व श्रु व विव कु व दि य नू या म द्वा द ना॥ नित्यं न य न य का म
दिना न न द द ति ता॥ प्रव त॥ ॐ व त व क्श सा॥ हि म क १ ६ नू स नि सा॥ द कि र्त
क वू व क्श व न क सून १ ॥ ॐ ति॥ ॐ पु स न व द न सो म्यं कि शि ज्ञान ति नी क र्ण॥
दि य न ल स या का ल क र्ण क र्ण ल क र्ण वि ता॥ ॐ ति॥ ॐ क र्ण क र्ण क र्ण क र्ण क र्ण

विनाजिहादयनरुटककाद्यं वा लमदस्मि धृतायुधम् ॥ यमप्रतापनायका
विश्वलुपयनमस्वनी । दिव्यबन्धुपरीधानादिव्यालंकायकविता ॥ नानापू
ष्यवकविता ॥ नानागर्भकुमादिता । नदीफेवमहाहागमाहवकुववसि
ता ॥ मरुधगं वविश्वलुपयनमस्मि नमूरुमा मूयतिसवयायं वनिपूयानि
शुनागर्भ ॥ ॐ तिष्ठान् ॥ ॥ ततो यूय ॥ जनमासगवतिनूदायेरुं ३ ॥ जनमा
वामुयैरुं ३ ॥ जनमावाकाजमाहगमयेरुं या ॥ जनमःसर्वका

मार्थसाधकायेरुं या ॥ अश्रुजनामनीनांरुं या ॥ असर्वतायप्रतिद्वनती
नांरुं या ॥ सवूययनमवूयधनिवलितीनांरुं या ॥ सवसवव
नीकनर्भकादनामूतनसमसुकमप्रवलितीनांरुं या ॥ सवमाहह
दययनमसिद्धिरुं या ॥ अपनिकमप्रयनयनरुं या ॥ सवकमसिद्धिकनेरुं
या ॥ समाहमवचनगुरुंरुं या ॥ ॐ तिनूदखर्ष ॥ ॥ अश्रुशानवममाधव
नदविमलेषीश्रुवमपणीविद्यया ॥ ॐ त्यादिकुमममाहस्वनीकोमानीवे

॥ अथ मूल स्तुतये ॥ कालामुमुक्षु कन्दयव नवतशतता नते दानद्वन्द्व
 युध्दी नरगति वरु वसु दलकमलैकगवैकहि काया ॥ नमः ॥ अथ वा सुवर्णसिच
 लकियुता ननु नायाकलीनं अथो कस्य मूलवकु विविधरुलपुदा सैयदभक
 लक्ष्मी ॥ ॥ अथ वन्यासः ॥ ॐ हृदयाय नमः ॥ ॐ श्रीनिवासस्वा ॥ ॐ श्रीनि
 वसे स्वा ॥ ॐ श्रीनिवासे वीर्यवट ॥ ॐ श्रीकव्याय नमः ॥ ॐ श्रीनरुणायैव वषट् ॥
 ॐ श्रीशुक्राय नमः ॥ ॐ श्रीपुनर्वसु ॥ ॐ श्रीसुतदयात ॥ ॐ श्रीधनसुखा
 दि ॥ ॐ श्रीपुष्टिकोसने ॥ ॐ श्रीधनवकु सुखमस्तुला विधेययुववपुता

॥ ५ ॥

सुनया ॥ ॐ स्वाविष्णु नवकुदनुमस्तुला विधेययुववपुता सुन
 या ॥ ॐ मतिपुनर्वकु अग्निमस्तुला विधेययुववपुता सुनया ॥ ॐ श्री
 नास्तवकु गङ्गाकिमस्तुला विधेययुववपुता सुनया ॥ ॐ श्रीशिव
 कुशुनक्तविक्रमस्तुला विधेययुववपुता सुनया ॥ ॐ श्रीसिद्धा सुनया
 ॥ ॐ श्रीपद्माय नवकु उद्यातातवुमस्तुला श्वनिनरुनकमला सुनायया ॥
 ॥ नमो नमः ॥ ॐ वरुणसैमि गंधर्वशेवर्षुनयस्तुला विधेययुववपुता

हिमंशुवृक्षा सादमधनिर्वा ॥ उमत्रयनयुवातं स्वप्नमेकगवज्ज कोर्ग
स्वप्नवीलवाश्ववनदाकनदक्षिणा ॥ वामस्वप्नगगुलं च पनू ॥ हस्तक
यागक ॥ यत्नकयालवेर्षं च श्रुत्या शयनागने ॥ यद्दनेवदितं जानूवा
मानूवा वदेवती ॥ एकवक्त्रा हिमंशुवृक्षं श्रुत्या वदुर्महिता ॥ द्विजुगावने
दादकं सिद्धममरयं कन्यानाता रुवता ॥ सा सा सनकस नल संयु
ता ॥ एतेनवानन्दन्यायं कथां कथयुका हिता ॥ एवम् ॥ तामसादवोक्ति

प्रसिद्धिमानवा ॥ ॥ तिमूलकान्धनमाम्ब विविक्तयता ॥ तना
नयासुषुम् ॥ पाशावमेकीय स्नानमलिस्नानं वन्दनादसिद्धनयस्त्रा
यवीत मात्यपृथ्वीयता ॥ ॥ ततस्त्रियाश्रुतिर ॥ गश्रुधानकाधिया
नद्यानननकुं संवसेसवसवकुं सं ॥ को नूडनूयकुं या ॥ गवेंवज
कृत्रिनी कुं उला ककर्वती कीका मांन जावली की लु म दा को र का
नमीव मोह ॥ ॥ गनमा रगवति सुं कृत्रि काये जा की दू धान

निजयादि॥ ॥ ततः श्रुष्टदलपूष॥ १ श्रुष्टां श्रुतितागजेव वायव्यवृष्टा यती
न किं सदितायया ॥ १०००॥ वृष्टसेव व कं मादृष्टवीन किं सदितायया ॥ १३
उचं शुसेव व वं कोमावीन किं सदितायया ॥ १४ सजं कायसेव व वं वेष्टुवीन
किं सदितायया ॥ १५ ६६ उन्नरुसेव व तं वा ना दीन किं सदितायया ॥ १६ नं नं क
पालिसेव व पं नं द्यायतीन किं सदितायया ॥ १७ ३० लाघमसेव व य वा मृष्ट
न किं सदितायया ॥ १८ वृष्टः सीता न रं व वं म दाल कीन किं सदितायया ॥ १९

वादी न नं ॥ ॥ ति श्रुष्टदलपूषनं ॥ ॥ ततस्त्रिरुपूष॥ १ ससत्यायया ॥
१ न नं न सया ॥ १ न नं न सया ॥ ॥ ति श्रुष्टमगुलपूषनं ॥ ॥ ततावाष्टवहुक्का
न पूष॥ १ १०॥ १ कां कां इं के के के १ क उया लायया ॥ नेमत्य ॥ १ मं गी ग
नें ने गं ॥ १ ने जी कल ग ल लयया ॥ वा पूष ॥ १ श्रीं श्रीं कल पूष व द क ना था
यया ॥ १ न नं ॥ या स व या निनीया ॥ १ त्या व व का ल पूषनं ॥ ॥ ततावाष्ट
पूष ॥ १ ल ॥ १ उया ॥ १ नं श्रुष्टिया ॥ १ मृष्टे मया ॥ १ कं ने अत्यया ॥ १ वृष्ट

उं गं हं रं सें रं श्री कृष्णनाथाय कृष्णवरीनिवर्तकिसुदिता यः ॥ आवाहनादि ॥
 नृतिपविमाम्नाय प्रकृतं ॥ ॥ उं क्रीं खूं मूं ॥ मूं ॥ क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं ॥ श्री
 उद्यत्यनायः ॥ उं उं उं सिद्धिकर्ता लीं क्रीं ॥ क्रीं क्रीं क्रीं नमः स्वा
 हा ॥ श्रीगुरुकालकादया ये ॥ उं गं उं मूं ॥ क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं
 मं ॥ श्रीसिद्धिलक्ष्मीदया ये ॥ उं गं सें रं श्रीमहाविद्यानाथवरीदं रं श्री
 सिद्धिलक्ष्मीदया ये ॥ उं गं सें रं श्रीमहाविद्यानाथवरीदं रं श्रीसिद्धि

लक्ष्मीदया ये ॥ उं वं वलि ॥ आवाहनादि ॥ नृति उरुनाम्नाय प्रकृतं ॥ ॥
 उं क्रीं सो क्रीं वागुश्रुतिवक्तृकामनीयातिथमजीतनाथनिककामव
 नीदवी उं उं उं मं किं प्रीया ॥ नृति वागुवो ॥ उं क्रीं सो क्रीं कामना नमः
 वक्तृकालेधनपी ० वसीतनाथनिकवक्तृवरीदवावि क्रीं प्रकृति प्रीया ॥
 नृति कामना जी ॥ उं क्रीं श्री क्रीं क्रीं वेदवक्ता यः ॥ मं ॥ उं क्रीं श्रीं किं
 उं क्रीं सो ॥ ~~नृतिः नृतिः नृतिः नृतिः~~ नृति वीरुसामवक्तृप्रकृतिनिवर्तक

वेव्यकली भजती नथा वषरुडं सर्व सिद्धि रूतिं छातये वव ॥ कंका
 लि रागु प्रसिद्धा भूमा क्रिकल दृष्टि यै ॥ जयामा तंगिका दिव्य तथा विपून
 वातकी ॥ नाकसी धावना दास्य नक की विव्य नूयिनी ॥ जयकारि नूडपी विव्य
 सुनात्री ननरा जनी ॥ वषरुडं महा काली कं कालि विक दानना कोध मारी
 मम डाव वायूय गम रयानना ॥ वक्रि विव्य नूड विपूय नूडा नूड ध्वनी सुथा वा
 नाही नान सिद्धि विव्य ति वइती च षड्विका ॥ ०० दीदिया मम या गिनी वलिं गृह

दुम सदा ॥ ०० ति च उत विद्या गिनी वलिं ॥ ॥ तता उग्र च उ दि वलि ॥ ॥
 श्री नूड च उया ॥ ॥ ०० की वेषू वी वलिं गृह रखा हा ॥ श्री पु च उ यया ॥ ॥ ०० की
 की मानी वलिं गृह रखा हा ॥ श्री वं इ गम यया ॥ ॥ ०० की मा रुध्वनी वलिं गृह र
 खा हा ॥ श्री वं दना यया ॥ ॥ ०० की वक्रा यली वलिं गृह रखा हा ॥ श्री व उ द वी पा ॥
 ॥ ०० की म हा काल नमः सर्व म दना य वलिं गृह रखा हा ॥ ॥ ०० की गुया ला यया ॥
 ॥ ०० की सर्व काम दा य वलिं गृह रखा हा ॥ ॥ श्रुति व वि का यया ॥ ॥ ०० की म हा ल

श्रीवलिंगुद्रस्वाहा॥ वलुवुपिनीपापगर्वंकीवामुवलिगुद्रस्वाहा॥ वं
कीन्त्यायतीवलिंगुद्रस्वाहा॥ श्रीवलुवुयपा॥ वंकीवामाहावलिंगुद्र
स्वाहा॥ ~~निवृत्तमयविति~~ ॥ कतासमयवलि॥ वं सर्वपीभय
पीभतिद्यानायकावमववाकृतायकृतासंदाहं सवदिह्यागसंस्मिता॥ या
गिनीयागवीन्यासर्वतयसमागता॥ नुयवमदावकुशीतोथवनदा
मम॥ यत्स्वासासनेदवीगुन्यानाचनता॥ सवसिद्धिप्रसादायदवित

शीखरुदा॥ वीनाम्यागिनीनाचयदिवंतिमहातल॥ तज्जतालुवलिनंद
विसमयावावमवकी॥ धृतिस्मृतिमनयूहिमासमदासिद्धावित्तीतिहृक
यंदुदृष्टानांयागिनीगतासंकृता॥ कृदकालिकसप्रातिइन्निमिलाइहा
खिता॥ तिहृकयंदुदृष्टानांयागिनीगतासंकृता॥ उकावादिषयापीताह
सानापायकीहिता॥ डाषधीभउसंदाहादंममुविधिसासुव॥ मदीपाताल
वकाउसवस्मानातलषवायागिन्यायागयूकान्यासमयधितसाधका

॥ वीनव कुंमसूनेनु सत्यंतिष्ठनुदवता। सिद्धाय पूजकालावसाधकारवसि
सायिनी नगत्रवाथग्रमवा प्रतया वासनीधवा। वायिकुपे कविकेवा गम
मनेमाहमसुला॥ नाना नूयधवा दवीवट्टका विविधनिव। तवसुवयिसे
उद्धावलिगुद्रनुसुवया॥ शत्रुतात्त्वयदंतरवा सुवभतल्लयद। पालादय
मयावुद्मान करिष्यामि पयत्नं॥ वलिष्यपुदानन संस्तित्वममविक
कासुवकमाति सिद्धनु सुवदेषायमकथ॥ निवगकियसां दवीममगादि

कूटकूट। सुवदेषकमदवी ग्रीककावाकनमामाह॥ ॥ उं गं कौं कौं कौं कौं
पयालायवलिगुद्रस्वाहा॥ उं गं ग्री कौ कूल पूजवट्टकनाथयवलिगुद्रस्
वाहा॥ उं गं गं गीं गूरेनें गौं गं॥ उं गं ग्री कूल गालायनीयवलिगुद्रस्वाहा॥ उं गं
उं गं गं दानवीरमगना विपतयवलिगुद्रस्वाहा॥ उं गं गूं ग्री सिद्धिवाग्
उयवलिगुद्रस्वाहा॥ गं सर्वे त्यागुतत्यावलिगुद्रस्वाहा॥ गं ग्राकासवान
निसर्ववर्गत्यावलिगुद्रस्वाहा॥ गं समस्तमनुषीति सिद्धासनपीठिणीभय

सुकात्रावता न काल शर्पिर्लूगि श्याम य वयू न वने डा ठि या न यु य न ॥
आलाख्य या ग मूर्य कूल पति न ग न काम नू य स नू य ड कू न्या म द द्वा स य
दू य द ह न व ला उ द र ग प्र द र ग ॥ श्री रते ल या त्रि ज्ञा त य मू गु य ति त्रि ल य द म
वि श्व व ल न श्री मा क्ता वा उ द र ग म नू त य थ गि नो डा कि नी म कि नी ना ॥ का
मी न व नु द र ग इ वि द म ल य क उ म्म वा द कू नू त मु ना म्म द कू डा कू उ न सि
वि न ड क सि ड क उ ड द्वा न ॥ उ नू श्या या त्रि ज्ञा त हि म गि त्रि गि ख न का शि द्वा

त प्र या ग सो ना कू म म्म द र ग र गु पू न न ग न का ग न का मु क वा ॥ का लू
ट का कू ल वा म ग म य पू न व न क र्क कू कू क लि उ व द्वा म द स वा द हि म न ड
घ ट ल या ट ल डा कू ला ख्य ॥ श्री ओ द मा र व क मू नि ग द त्रि ल य डा ह न व नु
द र ग ना सो नं यू य ना ख्य नि त्रि ग दि न गु द्वा कू व ति द ना द ॥ व ग म ख्य सी
म ना द ति व पू न न ग न र ड मू ल क या ख्य श्री वि श्व ख्य क कू उ प्र व ल गि त्रि
न ट य क कू म्म व ल का वा ना द र्या वि म ल शि य थ मू नि य थ गु ड कू ल व मा न

संज्ञा नमो ब्रह्मालमलयगिनिविष्टं यद्वै ब्रह्म बलं का वा वा दायी विना लसि
यथ मूनिपेक्ष पुंड्रकं यथा मूनिपेक्ष पुंड्रकं यथा मूनिपेक्ष पुंड्रकं यथा मूनिपेक्ष पुंड्रकं
लथाने प्रकृतिपूतल यमिह क (पुंड्रकं) क (पुंड्रकं) क (पुंड्रकं) क (पुंड्रकं) क (पुंड्रकं) क (पुंड्रकं)
यनं गङ्गा शय सुलभं यागिन्या महुजाश्च विविधवृक्षनूतां मातनस्ती सस
वर्तुषाः सिद्धाः सुसिद्धा विविधवृक्षनूतां दिव्या सिद्धिं ददन्तु ॥ स्वस्ति मया मनु
सिद्धिं पूजयन् विसर्जयेत् स्वर्गं गतिं लोकां वनन्तां गङ्गां रुद्रं विलिखति न जयं रुद्रं

न सर्वविधा दीर्घाश्च कवित्वे निधिरस्युटिका पाइका काम सिद्धिं
सर्वविधा ददन्तु मूलि विनितनता सौत्रवना नून का ॥ इष्टं यथा वा विमा
नियुक्तं गतं गतं विष्णु पातनं वा नागदा नगलो य विद्ये दय उ ह यं य
विनित्य मूला वौद्धं का वयं की ह ह ह ह ह सि ते य य य की पि व की
नृणां की मनु माता किलि किलि त कि रि को ल ला भा द्वि न की ॥ सा पु का काम
नृणां य न ल व य द ह ह ह ह ह का न ना दा उ लि य नी ल क ला मू म न सू ह द य

गुह्य २ स्त्राहा ॥ कमस्ववदाममस्त्राहावलिगुह्य २ स्त्राहा ॥ न्निमहावलि ॥
नतायागिनीवलि ॥ १ यां यौ मुं यः ४ यां यागिनी स्त्रावलिगुह्य २ स्त्राहा ॥ १ उ
इति क्राहुतावादि विदि घनत रुतलेनूयुववायातालवाननवासालिलयव
नयायज कुरहितावाकुरपी १५ यपी १५ दिषुवयद रुतायूषधूयादिकनपी
लाब्ध्याहदातंगुह्यविधिवलिनायाहुवीरद्वयासाधसि १५ वसर्वं मुलिधि
निरतवलिगुह्यमममिकाम ॥ १ यां यागिनी स्त्रावलिगुह्य २ स्त्राहा ॥ न्तिथी

गिनीवलि ॥ आवाहनादिगयन ॥ ॥ नतानिर्वाणवलि ॥ १ हं २ सं २ मूलन ॥
अ १ ध्यानवक्त्र ॥ १ कवर्तुका मयूषयनविषूनगता जालपी १० जयम्माख
क्रा १ तम १५ यी १० विषूनगतिशूता सुग्रतिशककावा ॥ आवायसिद्धिसेय
नियतयनतघट्टियागिन्यदहं मुकंदहृदकजमुजमलकसदयं देवदेवीन
मागमी ॥ न्तिनिर्वाणवलि ॥ ॥ भूयादीय ॥ नैवय ॥ मधुल ॥ जाय ॥ लोभ ॥
वागमूलायुक्ता ॥ कोमानी नागचन ॥ धजागमप्रकाविधि ॥ ममत्त ॥ ०